पहला भाग :

द्विखंडिता माता, धर्षिता भगिनी

(दो भागों में बटी हुई माता और बलात्कार के शिकार बहनें)

''दस लाख आदमी मरे राह में, ७५ हजार लड़कियाँ बलात्कार के शिकार बनी । हजारों हजार परिवार टूट गया ।'' कम से कम ७५००० से १००,००० बहुबेटियों को पकड़ना पड़ा लुटेराओं के हाथों में, इन्होंने लुटा लड़कियों के सम्पद, अस्मिता, शरीर एवं इज्जत, ५० हजार बच्चों का जन्म हुआ था बलात्कार के फलस्वरूप। लुटे गये लड़कियों के बच्चे हैं देशविभाजन के और एक फसल।

(आनन्दबाजार ७-०२-९९, १४-२-९९ एवं २१-२-९९)

भूमिका

सविनय निवेदन

पत्रिकाओं में अक्सर एक विज्ञापन देखने को मिलता है—दस रू० में एक टिकट लेकर दस लाख रूपये का मालिक बनें । यदि मैं दस रूपये में टिकट खरीदकर दस लाख का मालिक बनता, उससे जो आनन्द मुझे प्राप्त होता उससे भी अधिक मेरे लिये आनन्द का विषय हुआ । इसी वर्ष ऊर्वशी बुटालिया का पद्मश्री सम्मान पाना । प्रतिवर्ष मैं करीब तीन या चार अखिल भारतीय कॉनफारेन्स में उपस्थित होता हूँ । ये साधारणतः आयोजित होते हैं दिल्ली, कुरूक्षेत्र, पुणे, कर्नाटक के विजय नगर, गोरखपुर आदि शहरों में । उन सभाओं में सारे भारत से करीब २५० से ३०० प्रतिनिधि आते हैं । इनमें आधा से ज्यादा सदस्य अपने अपने विषयों में डाकटेरेट हैं । इसके अलावे विश्वविद्यालयों के विभागीय प्रधान, सेना के सेवानिवृत्त अत्यन्त उच्च पदाधिकारीगण, अध्यापकों, लेखकों आदि हैं । अवकाश के समय मैंने ऐसे विद्वत् लोगों से बातचीत कर देखा है कि इनमें से ९९ प्रतिशत देश विभाजन के समय उत्पन्न उतनी बड़ी भूचाल या सुनामी के सम्बन्ध में बिल्कुल अनजान है । देश के बटवारे के समय जिनका जन्म हुआ था वे आज प्रवीण नागरिक हैं । उनकी धारणा है जैसे पिता की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्रों में शान्तिपूर्ण ढ़ंग से जमीन जायदाद घर का बंटवारा हो जाता है उसी प्रकार से एक साधारण घटना के क्रम में देश आजाद हुआ ।

ऊर्बशी को 'पद्मश्री' प्राप्त होने में मैं एक नवीन युग का संकेत देख रहा हूँ । इतने दिनों तक कांग्रेसियों के द्वारा जो असत्य इतिहास के जरिये देशवासियों को दिग्भ्रमित किये जाने का कार्य चला है उसकी समाप्ति होने जा रही है । अब रचित होगा भारत को तोड़ने का नया इतिहास । जनसाधारण जान सकेगा इतिहास की सच्चाई । हो सकता है मैं तब तक जीवित न रहूँ। कारण मैं ८२ वर्षीय वृद्ध हो चुका हूँ । साधारणतः आदमी इतने वर्ष जीवित नहीं रहते हैं । मालूम पड़ता है विश्वपिता स्वयं मुझे इस पापाचार को उन्मोचन करने के लिये ही जीवित रखे हैं ।

-रवीन्द्रनाथ दत्त ।

द्विखंडिता माता, धर्षिता भगिनी

भारतीय संविधान ने जनसाधारण को बोलने की स्वतन्त्रता या सच्चाई को उजागर कर जनता को जागरुक करने का अधिकार दिया है । लेकिन पश्चिम बंगाल सरकार ने एक आदेश पारित कर जनसाधारण के उस अधिकार का गला घोंट दिया है । उसमें कहा गया है कि विगत १२३५ (७१२–१९४७) वर्षों के मुस्लिम अत्याचार, नारीधर्षण, मन्दिरों का ध्वंस या विनाश आदि घटनाओं के बारे में कुछ भी न तो लिखी जायगी और न कही जायगी ।

``Muslim rule should not attract any criticism. Destruction of Temples by Muslim invanders and rulers should not be mentioned.() Circular no. SYL/89/1 date 28.4.1989. Ministry of Education, Govt. of West Bengal.

लेकिन इस रोषपूर्ण आदेश की उपेक्षा करते हुए जितने बहादुर लेखकों ने मुस्लिम वर्वरता की कहानी को सामने लाने की कोशिश की है उनमें पश्चिम पाकिस्तान के लाहौर से निष्काषित एक शरणार्थी परिवार की कन्या ऊर्वशी बुटालिया एवं बंगलादेश के ऐतिहासिक एवं अनुसंधान कर्त्री नूसरत जहान आयेशा सिद्धकी के दो ग्रन्थ अति मूल्यवान है । ये दो किताबों को प्रत्येक हिन्दुओं को अवश्य पढ़ना चाहिये । (यद्यपि इस देश में हिन्दुओं की संख्या बहुत कम है, सेकुलरबादी वाले ही बहुसंख्यक हैं) ऊर्बशी की किताब का नाम है "दि आदार साइड ऑफ साइलेन्स, भॉयेस फ्रांम दि पार्टिशन ऑफ इण्डिया" (The other side of silence, voice from the partition of India)

इस पुस्तक में आजादी के ठीक पहले १९४७ के १३ अगस्त से जब तक पश्चिम पाकिस्तान से अन्तिम हिन्दू और शिख देश निकाला नहीं किये गये तब तक का हृदयविदारक दिल दहलाने वाली कहानियों का वर्णन है । विशेषरूप से नारियों पर अकथनीय जुल्म तथा अत्याचारों का वर्णन किया गया है ।

उल्लेखनीय है कि देशविभाजन के समय पश्चिम पाकिस्तान में हिन्दुओं तथा सिखों की आवादी थी २७ प्रतिशत, वर्त्तमान में दो प्रतिशत हैं । और नूसरत जहान आयेशा सिद्दिकी रचित पुस्तक में ७१२ ई० (मुसलमानों के सिधु विजय) से लेकर प्रकाशनाकाल पहली जनवरी,२००७ तक इस्लामी वर्वरता का समुचा इतिहास अति संक्षेप में वर्णित किया गया है । पुस्तक का नाम

है—इस्लामी शान्ति एवं विधर्मी संहार । पुस्तक की प्रकाशिका हैं और एक असीम साहसी मुसलिम महिला—नाम सुलताना विनते लयला अन्जुमन्द आरावानु । ढाका जैसे कट्टर इसलामी बंगलादेश की राजधानी में रहकर ऐसा एक विस्फोटक पुस्तक प्रकाशित करने की हिम्मत दिखाने के लिये ये दो महिलाओं को मैं तहे दिल से श्रद्धा निवेदन करता हूँ । गत २८-९-२००९ को ढाका जाने के पश्चात् लेखिका ने मुझे एक प्रति उपहार स्वरूप दी है ।

ऊर्वशी की किताब को मैं आधी रात में पढ़ते रहता हूँ । पढ़ते-पढ़ते आंखें आँसू से भर उठता है । आंसूओं के बुन्दों से किताब के पन्ने कितनीवार भींग गये इसका हिसाब मेरे पास नहीं है । मेरी पत्नी रमा एवं सुपुत्र अम्लान तथा बेटी पॉपि बार-बार कहते हैं—इतनी रात को आप क्या कर रहे हैं ? सो जाइये । मैं वासिंग बेसिन में जाकर आँखों को धोकर मुँह में पानी की छिटा देकर अशान्त मन को शान्त करता हूँ । जिससे कि मेरे हृदयतोड़ रूलाई कोई सुन न पावे । मुझे ऐसा लगता है कि देश विभाजन के ठीक पहले अत्याचार के शिकार माताओं, बहनें, बच्चे तथा आवालवृद्ध वणिताओं की मृतात्मा मेरे चारों ओर मँडरा रहे है मानो वे कुछ बोलना चाहते हैं ।

साधारणतः इस किस्म की किताबें अधिक लोगों के हाथों तक न पहुँच पावे इसकी पुरी चेष्टा रहती है हमारे सेकिऊलर सरकार एवं मुस्लिम वोट भिखाड़ी नेताओं की ओर से ।

यहां मैं अपने थोड़े अनुभवों के बारे में कहना चाहता हूँ । १९४६ के १६ अगस्त मुस्लिम लीग के डाइरेक्ट अकशन डे (Direct Action Day) के दिन मैं ढाका शहर के निवासी था । उस समय असंख्य हिन्दुओं की हत्या कर उनके सारे शवों को नंगा कर (जिसकी विभासता देखकर हिन्दू डर जाय) ट्रकों में लादकर हिन्दू बहुल महल्ला उआरी में भेजा जाता था दाहसंस्कार के लिये । उन शवों में नंगी महिलाओं के शरीर एवं बच्चों के मस्तकविहीन शरीर भी था। नंगी महिलाओं के स्तन एवं नीचला पेट के मांस उन नरपशुओं ने दाँत से काटकर या कोई हथियार से निकाल लिया था । एक दिन एक वृद्ध सज्जन वेसे एक नंगी महिला का शरीर देखकर होश खो बैठे । बच्चों के सिरों को लाइटपोस्ट अर्थात विजली के खम्भों से या अन्य कोई के साथ टकराकर चुर-चुर कर दिया गया था । ट्रकों में त्रिपाल जैसा मोटे कपड़ों को बिछा दिया जाता था जिससे कि मृतकों के रक्त नीचे रास्ते पर न गिरें । ट्रकों सै मूर्दो के हाथ पैर पकड़कर उतारते समय हमलोगों के पैर का निचला

भाग खुन में डुब जाता था । परिस्थिति कुछ शान्त होने पर जब स्कूल कालेज खुलने लगे तब हमारे सहपाठी मुस्लिम लीग के कट्टर समर्थक छात्रों से पूछा—हिन्दुओं के मुर्दो को श्यामपुर घाट में श्मसान में न भेजकर डयारी महल्ला में (जहां सबसे अधिक शहर के उच्चशिक्षित लोगो के निवास है) क्यों भेजा गया । उन्होंने कहा—लीग नेतागण तेरे जैसे लोगों को डराने के लिये वहाँ भेजा था, कारण पाकिस्तान की माँग न मानने पर तेरे को भी यही हाल होगा । इतने में नोआखाली (उल्लेखनीय है कि नोआखाली में हिन्दू निधन शुरू हुआ था १०—१० १९४६ को) के हिन्दू निधन के शिकार एक परिवार ढाका शहर के हमारे मुहल्ला में एक सम्बन्धी के घर आये । उक्त सज्जन की पत्नी को मुसलमानों ने घर से उठाकर ले गये थे । वे सज्जन आदमी उनके १२-१३ साल के एक पुत्र एवं दो छोटे कन्याओं को साथ लेकर आये थे । परिवार के सम्मान रक्षार्थ यह अफवाह फैलाया गया कि उक्त महिला मुसलमानों के हाथों मारी गयी थी । उनकी एक श्राद्ध की व्यवस्था की गयी । लड़के को कहा गया मस्तक मुंडन करने की । नाई बैठा था । लड़का ने चिल्लाकर रोते हुए कहां—मेरी माँ नहीं मरी है, उनको मुसलमानों ने पकड़कर ले गये हैं ।'' तीन चार जवान लड़कों ने उस लड़का को कसकर पकड़े रहे । नाई ने उसका मस्तक मुंडन किया । पुरोहित ने दो चार मंत्र उच्चारण कर उस जीवित महिला के श्राद्ध सम्पन्न किया । मैं उस श्राद्ध अनुसंधान में उपस्थित था । इसके बाद नोआखाली गये श्वेच्छासेवक के कार्य में हाथ बटाने । वहां हिन्दू महिलाओं को जमीन में लेटाकर मुस्लिम लीग के गुण्डों ने पैर के वृद्धागुंष्ठ से उनके माथे के सिंदुर को पोछ दिया, हाथों के शाखा चुरी आदि तोड़कर, उनके पति तथा पुत्रकन्याओं की हत्या कर उन महिलाओं को बलपूर्वक इसलाम धर्म में दीक्षित कर लीग के गुण्डों ने उनसे विवाह कर लिया । बच्चों को फूस के ढ़ेरो पर सिढ़ि के सहायता से चढ़ाकर चारों ओर आग लगा देने के बाद जब आधा जला हुआ बच्चे जमीन पर गिर पड़े तो उनके पैरों को पकड़कर तालाबों में फेंक दिया गया । जो इन्सान जान के भय से पोखरों या तालाबों के पानी में कूद पड़े थे बर्छे, भाला तथा अन्य तेज हथियारों से उन्हें मार दिया गया ।

तालाबों में आदमियों के मृत शरीर जब तैरने लगा तब कौआ और चील आदि उनके मांस खाते खाते थककर उनके शरीर में घुसे हुए वर्छा, काटारी भाले के लकड़ी के हातल पर (पकड़ने के जगह) बैठकर विश्राम करते थे।

नोआखाली के ग्रामों में राहत कार्य पर जाकर एक करूण दृश्य देखा था जो यहाँ उल्लेख करने की इच्छा से अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ । एक महिला के पति तथा बेटे बेटी को हत्या कर हत्यारा ने उक्त महिला को अपने घर ले गये और उसे कमरे के अन्दर ताला लगाकर बन्दी बनाकर रखा । जिससे कि वह भाग न सकी । वह महिला कमरे के अन्दर छाती पीट रही है, माथे का बाल नोच रही है । कमरे के खुटा पर अपना मस्तक ठोक रही है और फिर कभी-कभी होश खो बैठती है । उस समय कोई भी मुसलमान पुरूष या नारी उसके उद्धार हेतु सामने नहीं आये । उलटे वे कमरे के चारो ओर खड़े होकर बांस के फाँकों से तमाशा देख रहे थे । उनलोगों में उस हत्यारे की पत्नी एवं पुत्र कन्या भी थे ।

नोआखाली में हिन्दु हत्या के पश्चात् सरकार ने एडवार्ड स्कीपर सिमसन नामक भूतपूर्व विचारपति से एक तदन्त कामटी का गठन किया । सिमसन साहब ने अपने रिपोर्ट में लिखा कि एक इलाके में चार सौ से ज्यादा असहाय रमणियों का बलात्कार किया गया और प्रामाणिक सुत्रों से प्राप्त समाचार के मुताबिक और इलाकों में तीन सौ से भी ज्यादा बलात्कार की घटना घटी है ।''

कांग्रेस सभापति आचार्य जे० वी कृपालनी की धर्मपत्नी सुचेता कृपालनी नें नारियों के उद्धारकार्य में अग्रणी भूमिका अदा की । दंगे के नेता गुलाम सरोबार ने घोषित किया कि सुचेता कृपालनी को जो बलात्कार कर सकेगा उसे एक मोटी रकम इनाम के तौर पर दिया जायेगा एवं उसे गाजी उपाधि से विभूषित किया जायेगा । अतः सुचेताजी अपनी सम्मान रक्षार्थ हर समय पोटासियम साइनाइड के कैपसूल अपने गर्दन में लटकाकर रखती थी । जो हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया गया था उन्हें जब उद्धार करने गये, तो वे बोले—बाबू, हमलोग मुसलमान हो गये । हमारे मुँह में गोमांस ठुस दिया है । घर के महिलाओं को मुसलमानों ने अपहरण कर ले गये । क्या हिन्दू समाज हमें समाज में स्थान देगा ? हमारे हाथों से जलपान करेगा ? मैंने कहा—हिन्दुगण पूर्व की भांति ही आप लोगों को ग्रहण करेंगे । हमारे धर्मगुरूओं ने यह विधान दिया है । लेकिन वे हमारे मौखिक बातों पर विश्वास नहीं किया । उस समय रामकृष्ण मिशन की ओर से ''पूर्व और हिन्दु समाज नाम से एक पुस्तक प्रकाशित किया गया था । उसमें हमारे चारों शंकराचार्य ने एवं समस्त धर्मगुरुओं ने यह विधान दिये हैं कि धर्मान्तरित हिन्दुगण अनायास ही फिर से समाज में गृहीत होंगे । छापे के अक्षरों में किताब देखकर वे झुंड के झुंड घर

मकान छोड़कर हमारे साथ चले आये । मुसलमानों ने उन्हें जाने से रोका नहीं कारण हिन्दुओं के पलायन से उन्हें ही लाभ मिलना था । हिन्दुओं के चल अचल सभी सम्पत्ति पर उनका अधिकार होगा । वह किताब अभी भी मेरे संग्रहशाला में है । बहुतों को उसकी जेरॉक्स कापि दिया है ।

कलकत्ता में घटित १९४६ के १६ अगस्त को ''मुस्लिम डायरेक्टर अक्सन' के मैं प्रत्यक्षदर्शी नहीं हूँ । फिर भी १९५० के १८ फरवरी को ढाका शहर में हिन्दुओं के कत्लेयाम के शिकार होकर एक कपड़े में विमान से कलकत्ता आकर तथों की संग्रह कर जो हासिल हुआ उसे संक्षेप्प में कहता हूँ । दंगे के पहला तीन दिनों में शहर में करीबं २०००० (बीस हजार) लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया । (पाकिस्तान के समर्थक ज्योतिबाबू की रचना से यह संख्या दिया गया है ।) सभी नाले तथा ड्रेनें आदमियों के लाशों से भर गया था । गंगा में इतने लाशें बहा दी गयी कि नाव चलाना दुस्कर हो उठा था ।' कलकत्ते के दंगे के प्रत्यक्षदर्शी भूतपूर्व पुलिश के डिरेक्टर जेनरल श्री गोलोक बिहारी मजुमदार आई० पी० एस० के एक निबन्ध से कुछ अंश यहां उद्धृत कर रहा हूँ । निबन्ध का नाम है—छियालिस के आतंक भरे दिनों को नहीं भूल पाया हूं ।

'१६ अगस्त १९४६, रात ११/१२ बजे मुहल्ले में फिर चढ़ाई हुई मैंने देखा लोगों के एक झुंढ, उनके हाथों में छूरा तलवार आदि नाना प्रकार के अस्त्रशस्त्र । वे चिल्ला चिल्लाकर बोल रहे थे—आज तो एक-एक हिन्दू को कुर्वानी करेंगे । मां, पिताजी, दिदि, मैं, मेरे भगना, सभी आतंकित, भय से कम्पमान, किसी भी क्षण हम आक्रान्त हो सकते हैं । सबसे ज्यादा भय दिदि को लेकर । दिदि देखने में अति सुंदर रहा है । हमने सोचा दिदि ही होगी उनके पहला टार्गेट । हिन्दु लड़कियों पर उनके सदा लालच । इधर परिस्थिति थोड़ा शान्त होने पर भी भय दूर नहीं हुआ । यूनिभरसिटी खुला था । राजाबाजार के रास्ते से मुझे जाना पड़ता था । एक दिन देखा गाय को काटकर जैसे लटकाकर रखा जाता है वैसे ही हाथ पैर काटकर हिन्दु लड़कियों को नग्नावस्था में बालों से बाँधकर लटकाकर रखा है । विभत्स और नृशंस वह दृश्य । जीवन में पहलीवार लड़कियों को नग्न देखा ।'

इस रचना को पढ़कर मैंने आदरनीय गोलक मजुमदार महाशय से मिलने की इच्छा प्रकट की । मेरा प्रश्न था कैसे एवं किसके साथ नंगे हिन्दु लड़कियों के शरीरों को लटकाकर रखा गया था । उन्होंने कहा—गौमांस के दुकानों में

जिस प्रकार लोहे के हुक में मांस लटकाकर रखा जाता है उसी प्रकार मांस के बदले लड़कियों के माथे के चमड़े के भीतर हुक को घुसाकर नंगे महिलाओं के मृतशरीर को लटकाकर रखा गया था । सब ९/३, टेमर लेन (कालेज स्ट्रीट) के देवकुमार बसु की रचना १९४६ के दंगे के कुछ दिन से कुछ लिखा जाय । 'राजाबाजार के सामने स्थित बिक्टोरिया कालेज एवं विद्यालय, लड़कियों के कालेज और होस्टल सम्पूर्ण वीरान, सभी पलायन कर गये थे। सिर्फ सड़क के ऊपर दो मंजिल के खिड़की पर चार लड़कियों को खुन कर सड़क की ओर लटकाकर रखा है किसने या कौन । ऐसी क्रूरता, विभत्सता जिसने भी देखा है वे ही अनुभव कर पायेंगे कि हमारे जैसे युवकगण क्यों उत्तेजित और क्षुब्ध नहीं होंगे । कोई भी इस होस्टल की ओर ताकने से देखेंगे कि सड़क की ओर खिड़कियों को इंटों से गांथ कर बन्द कर दिया है । आज साठ-सालों से ऊपर हो गया । फिर भी वे बन्द हैं । किनके डर से? (इस लेख की रचना काल २००६ से साठ वर्ष पूर्व की है ।) तत्कालीन गवर्नर जेनरल लार्ड वाभेल ने अपने रोजनाम में ३—११—१९४६ को लिखा हैं कि पलाषी की लड़ाई में जितने लोग मारे गये थे उससे भी अधिक लोग मारे गये ग्रेट कलकत्ता किलिंग में' यही दंगा था पाकिस्तान लेने की हथियार। हमारे देश के समाचारपत्र या प्रचार माध्यम पेट्रोडॉलार की नशा में चूर है राजनैतिक पार्टियां मुसलिम वोट के लालच में मुँह में ताला लगा लिया है। बुद्धिजीवी साहित्यिक लेखकों एक प्रकार चुप हैं । वे हिन्दु मुसलिम भाई भाई कहकर प्रचार करते हैं और नये प्रजन्मों के बच्चों को सम्पूर्ण अन्धकार में रखकर गाँधी नेहरू के हाथों अहिंसा के माध्यम से रक्तपात के बिना आजादी मिली है कहकर उनके गुणकीर्तन कर नये प्रजन्मों को गुमराह कर रहे हैं। एक कहावत है—(History replates itself) इतिहास की पुनरावृत्ति होती है । फिर यह देश वैसी विपत्ति में न पड़ेगा इसकी निश्चयता कहां ? इसका जीता जागता उदाहरण विगत ६ से ९ सितम्बर २०१० कलकत्ता से मात्र ३० किलोमीटर दूर उत्तर चौविस परगणा के देगंगा नामक स्थान में मुस्लिमकृत्य घटना। तृणमूल कांग्रेस एम०पी०हाजी नुरूल इसलाम के ताण्डव जिसमें ५०० हिन्दुओं के घर मकान दुकाने आदि की लुटा गया तथा उनको आग के हवाले कर दिया गया। असंख्य हिन्दु घर छोड़कर भाग गये । अनेक मन्दिरों को ध्वस्त किया गया। दो कालीमाता की मूत्तियों को तोड़कर टुकड़े कर दिये गये । मन्दिरों की मुर्त्तियों में पेशाव कर उन्हें अपवित्र किया गया । बेलेघाटा ब्रिज मार्केट में ६० हिन्दुओं

की दुकानें जला दिये गये, प्रत्येक परिवार के भोटर आइ कार्ड (वोट परिचय पत्र), राशन कार्ड, बैंको की खाताएँ पोस्ट आफिस के खाता, जमीन के दस्तावेज, दलिलें, जीवनवीमा पॉलीसी, दुकानों के हिसाव की कापियाँ सब जलकर राख हो गया । चार दिनों तक पुलिस थी सम्पूर्ण निष्क्रय । कारण मुसलमानों के वैसे कामों में वाधा डालने से सरकार को मुस्लिम वोट खाने का भय है । इस घटना के बारे में मिडिया भी चुप रही । इस सम्बन्ध में विस्तार से यदि जानना चाहते हैं तो ममता बन्दोपाध्याय को दिया गया मेरे खुला पत्र पुस्तिक को देख सकते हैं । मूल्य ३ रुपये, प्राप्ति स्थान विवेकानन्द साहित्य केन्द्र, ६ नं० बंकिम चटर्जी स्ट्रीट (कालेज स्ट्रीट) । हिन्दु आंखे रहेने सें भी नहीं देखते । कान रहने से भी नहीं सुनते। मुंह रहने से भी मुंह नहीं खोलते । इसीलिये बादशाह होसेनशाह ने राजा मदननारायण को कहा था–'समझे समधि, जो अन्धा है वही हिन्दु बनकर रहे, जिसको आँख है उसे मुस्लिम ही बनना चाहिये ।'

इतने के बाबजूद बाजारों में बिकने वाले पत्रिकाएं हिन्दुत्व तथा हिन्दु प्रेमियों को गाली देकर पानी नहीं पीते ।

हमारी सेनाएं जब पाक हानादारों के साथ काश्मीर में खुनीयुद्ध में लिप्त थे उस समय जिस पत्रिका के सम्पादक पाकिस्तान जाकर वहां के सेनाशासक तथा स्वघोषित प्रेसिडेन्ट जियाऊल हक के साथ गॉल्फ खेल सकते हैं वही पत्रिका, उर्वशी बुटालिया की किताब की आलोचना की है लगातार तीन रविवार तक । उससे कुछ अंश यहां उतारा गया हमारे सहृदय पाठक पाठिकाओं के जानने हेतु ४ समालोचना लिखे हैं विख्यात सांवादिक श्री रन्जन बन्दोपाध्याय ने । देश विभाजन के पश्चात् १९५० के १८ फरवरी को रात एक बजे एक वस्त्र में ढाका शहर से विमान से दमदम हवाई अड्डे में पहुंचकर अनन्त दुःख कष्टों के झेलते हुए जीवन संग्राम में सफलता हासिल की मैंने । मक्खी जैसे गन्दा चीजों को खोजते चलता है वैसे मैंने भी मुस्लिम अत्याचारों की खोज में असंख्य शरणार्थियों से तथ्य संग्रह किया । पश्चिम पाकिस्तान से आये हिन्दू, शिख, सिन्धी बलुच आदि शरणार्थियों से सुना है निर्मम बर्बर पाशविक अत्याचारों की कहानी । विशेषरूप से हिन्दु नारियों पर अवर्णनीय जुलुम की कहानियाँ । सभी वर्वरोचित अत्याचारों की घटनाएँ लिखकर एक पुस्तक प्रकाशित करने की इच्छा मन के इर्दगिर्द उभरती थी, लेकिन उस तरह की किताब लिखने जैसा विद्या अक्ल और अर्थबल मेरा नहीं था । फिर भी निराश नहीं

हुआ । ईश्वर ने मेरी कोई भी इच्छा अपूर्ण नहीं रखा । इसलामिक वर्वरता पर अनगिनत किताबें पढ़ी है । अन्त में समाचार मिला ऊर्वशी बुटालिया नाम के एक शरणार्थी परिवार की कन्या ने बहुत सारे पुराने दलिल दस्तावेज छान कर अनेक गुप्त एवं प्राय खोया हुआ इतिहास से एक किताब लिखी है । नाम है—(The other side of silence : Voice from the Partition of India) अनेक प्रयास के बाद उस किताब को मैंने प्राप्त किया । उस किताब को मैं धर्मग्रन्थ जैसा मानकर बारबार पढ़ता हूँ और मन को शान्त हुए शरणार्थियों से जो तथ्य मुझे मिला था उस किताब में वही लिपिबद्ध हुआ है । मुस्लिम लीग अभी कछुआ जैसा अपने अन्दर हाथ पैर घुसाकर बैठा है । समय आने पर वहां निकलकर फिर हिन्दुओं को नाग जैसा डसेगा इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है । मेरे इस किताब को आप सिर्फ उपन्यास के तरह एकवार नहीं पढ़ियेगा और न सिर्फ एकबार आँखें दौड़ाकर पढ़येगा । हृदय से, तहे दिल से इसे पढ़ने से आप समझ सकते हैं कि किस प्रकार का मूल्य चुकाना पड़ा था इस आधी आजादी के लिये । विशेषरूप से हमारे माताओं एवं बहनों के लिये। पश्चिम पाकिस्तान में शिख एवं हिन्दु युवतियों को पूर्णरूप से नग्नावस्था में दिनदहारे प्रधान सड़कों पर जुलुस निकालकर ले जाया जा रहा था । उनके स्तनों को काट लिया गया था । शरीर पर जला हुआ सिगरेट को दागा गया था। इस जुलुस का नेतृत्व दे रहे थे लम्बे दाढ़ीवाले पांच वक्त नमाज पढ़नेवाले मुस्लिम नेतागण । साथ में था लीग के चांदतारा वाला हरा निशान। और साथ में चल रहा था ढ़ोलबाजा नगारा आदि । इस दृश्य को सड़क के दोनों तरफ खड़े होकर हजारों हजार आदमी देख रहे थे और आनन्द उठा रहे थे । बहुतेरे औरत बाँये हाथों से अपने गुप्तांग को ढ़ककर दाये हाथों से तथा अपने बालों से स्तनों को ढककर लज्जा निवारण की चेष्टा कर रही थी। कोई कोई लज्जा के हाथों से बचने के लिये मुंह को छिपाकर जमीन पर बैठ गयी थी । मेरे संग्रहशाला में उस समय का खींचा हुआ एक चित्र है। अनिवार्य कारण से इस पुस्तक में उस चित्र को नहीं छापा गया। कारण वे सव नग्न महिलाओं का चित्र पुस्तक में प्रकाशित करना या जनता के सामने प्रदर्शन करना माताओं एवं बहनों का अपमान करना होगा । ऐसे अत्याचारों तथा जुल्म से बचने हेतु बहुत पिता एवं स्वामी अपने कन्याओं तथा स्त्रियों का अपने हाथों से मौत का घाट उतार दिया था । पश्चिम पाकिस्तान में जब इस प्रकार विभन्स ताण्डव नृत्य चल रहा था तब हमारे प्रधान मंत्री जवाहरलाल

गर्वनर जैनरल लार्ड माउन्ट वैटेन की पत्नी एड्वईना के साथ व्यभिचार में लिप्त थे । उस समय पश्चिम पाकिस्तान से लाखों लाख हिन्दु सिख पैदल भारत की ओर आ रहे थे । उस पदयात्रा की लम्बाई थी करीब १०० किलोमीटर, पश्चिम पाकिस्तान से अनेक आदमी रास्ते में ही मौत के साये में सो गये । युवतियाँ लूटी गयी । दुनिया के इतिहास में आज तक इतने बड़ी शोभायात्रा शरणार्थियों का देखने को नहीं मिला है । जवाहरलाल नेहरू ने श्रद्धामाता नामक एक सुन्दरी महिला के गर्भ में एक नाजायज पुत्र सन्तान का जन्म दिया । शिशु के पितृत्व को अस्वीकार करते हुए उसे अनाथ आश्रम में भेज दिया गया । और ऐसे व्यभिचारी आदमी के जन्मदिन को प्रतिवर्ष शिशु दिवस के रूप में मनाया जाता है । किस्मत का क्या विचित्र खेल । एड्वइना जब भारत छोड़कर चली गयी तब नेहरू की शोकवार्त्ता क्या थी जरा सुनिये । 'स्वर्ग के देवतागण या परियाँ आपको दिया है सौन्दर्य, असामान्य मेधा, माधुर्य, अकर्षण एवं प्राणों की प्रचुरता । दिया है असाधारण गुणराशि, जिस नारी में समावेश हुआ है इतने सारे ऐश्वर्य, सर्वकाल के लिये एवं सभी स्थानों में वे महीयसी है । लेकिन इन सवों से भी दुर्लभ एवं मानवता के स्पर्श धन्य कुछ ऐश्वर्य वे आपको दिये हैं और वे हैं मनुष्यों के प्रति सहानुभुति तथा असहाय दुःखी जनों के प्रति सेवा की ऐकान्तिक अनुप्रेरणा तथा इन दुर्लभ ऐश्वयराशि के अभूतपूर्व समावेश का परिणाम है पीड़ितों या दलितों के प्रति आश्वासन के एक कल्याणमयी व्यक्तित्व । जहां भी आपने पदार्पण किया वहीं आयी है शान्ति, मिली है सान्तवना। अतएव भारतवासी ने जो आपको प्यार दिया है, आपको उनके अपना स्वजन मान लिया हैं तथा आपको विदा देते समय उनके हृदय टूट रहे हैं इसमें आश्चर्य की क्या बात है । माउन्ट वैटेन परिवार के साथ हमारा बन्धन तथा सम्बन्ध अटूट है एवं जहां भी हो हमारा मिलन तथा दर्शन होगा ही ।'

(किताब का नाम THE UNTOLD STORY--लेखक ले० जे० वि०एम० कॉल ।

यहां पर पाठकों की जानकारी हेतु एक बात मैं उजागर करना चाहुँगा कि माउन्ट बैटेन की पत्नी को भारत भेजना और नेहरू को खुश कर देश विभाजन तथा उससे सम्बन्धित अतीव आपत्तिजनक घृन्य कार्यों को कार्यान्वित कराना एक बहुत ही सोची समझी दूरदर्शी साजिस थी । नेहुरू को सिंगापुर ले जाकर अति विलासिता में रखकर माउन्टवैटेन की पत्नी के साथ व्यभिचार

में लिप्त रखकर ब्रिटिश सरकार ने अपनी स्वार्थ की पूर्ति नेहरू सरकार से करवा ली। जिन जघन्य कृत्यों को जनसाधारण से सदा के लिये छिपाकर गुप्त रक्खा गया । इसी के तहत देश का बटवारा, पाकिस्तान का निर्माण, हिन्दु मुस्लिम दंगे तथा हिन्दू सामज कों कामजोर करना, देश के अन्दर अनेक समस्याओं से जनता को जर्जरित रखना, पंचशील तथा शान्ति के नाम पर देश की संप्रभूता तथा अखण्डता को ठेस पहुंचाना जो आज उजागर हो रहा है तथा अंग्रेज सरकार के आर्थिक लाभ पहुँचाना । आदि बहुत सारे बातें आतीं है । जनसाधारण को इन गुप्त तथ्यों को जानने का अधिकार होना चाहिये)

अनुवादक की अपनी बात ।

जाति के जनक हैं गाँधीबाबा छलकपट के एक सजीव मूर्ति । उन्होंने देशवासियों को बराबर धोखे में रखा यह कहकर कि देश का विभाजन होगा मेरे मृत शरीर के ऊपर । फिर सब के अनजाने देश का विभाजन हो गया और गांधीबाबा अक्षत रह गये । जब पाकिस्तान में असंख्य हिन्दु तथा सिख नारी बलात्कार के शिकार हो रही थी तब वे मौनीबाबा बनकर चुप रहें । जब लाखों लाख आवालवृद्ध वनिता मुसलमानों के तलवारों से अपना सिर कटा रहे थे उस समय भी गांधीजी निर्विकार रहें । चुप रहे । उल्टे भागने वालें हिन्दुओं को कहते थे—तुम नारियाँ मुसलमानों की बलात्कार को सहन करते रहे । इसीमें उनकी भलाई है इत्यादि इत्यादि ।

वृद्धावस्था में गांधीबाबा रात में युवतियों के साथ नग्न होकर एक ही शय्या में सोते थे । उनके व्यक्तिगत चिकित्सक डा० सुशीला नायर एवं गांधी जी को किस हालत में देखकर नाआखाली में उनके स्टेनोग्राफर तामिल ब्राह्मण परशुराम बाबा के मुँह पर नोट कापी एवं पेन्सिल फेंककर नोआखाली त्याग कर चल दिये थे यह एकवार बाबा के भक्तों को पूछिये ।

गांधीबाबा ने जयप्रकाश नारायण की पत्नी विभावती देवी की ओर भी अपना हाथ बढ़ाये थे जिसके चलते जयप्रकाश जी के साथ गांधीबाबा के सम्पर्क में कटुता आयी । गिरिजा कुमार के पुस्तक—Gandhi And His Women Associated से छोटा सा अंश यहां मैं दे रहा हूँ मेरे सहृदय पाठक पठिकाओं की जानकारी के लिये । 'गांधी के कमरे से सुनी गयी एक चिकने की आवाज । उसके बाद थप्पर मारने की आवाज' गांधीजी के स्वास्थ्य की निगरानी रखनेवाली डा० कन्या जैसी सुशीला नायर को लेकर कुछ घटना घटी है । अन्य लोग तटस्थ है मनुगांधी जो बापू की अपनी नतनी थी और सुशीला जो ये दोनों महिलाएँ

उस समय उनके ब्रह्मचर्य निरीक्षण के सहयोगी थे । बाद में मालूम हुआ कि व्यर्थता, हताश और क्षोभ में गांधी अपने ललाट को पलक के कोने से ठोक रहे थे । लेकिन इस सम्बन्ध में बापू के अपने तथा सुशीला जी के कोई बयान नहीं है । कारण स्पष्ट है, बापू ने उनको मुँह खोलने नहीं दिया । बाद में सुशीला जी ने कहा है कि रात में वह उनकी सेवा करती थी, उसके बाद मैं सोती थी । ठीक जैसा मानों मां के साथ सो रही हूँ । ब्रह्मचर्य परिक्षण नामक वस्तु के नामोनिशान उनको नहीं मिला। जे०वी० कृपालीन एवं निर्मल कुमार बसु गांधी के आलोचक हो उठे । इसके बाद अनुमति की प्रतीक्षा नहीं की गांधीजी ने । अर्थात् वे लड़कियों को व्यवहार में लाते थे । पहले-पहले बहुत बार ये सब लड़कियाँ बारिबारि से गयी है। पहले बहुत बार वितर्क का तुफान खड़ा हुआ है । १९३९ में एकवार लड़कियों के हाथों सेवा लेने के कार्य को केन्द्रित कर आश्रम में छोटे पैमाने पर एक क्रान्ति की आग सुलग उठी थी । आश्रम में अन्यों के लिये नारी बर्जन की विधान थी कठोर । लेकिन इधर गाँधी अपने को इस विधि निषेध के ऊपर रखे थे । कारण वे थे अर्धनारीश्वर कामगन्धहीन । तरूणी नतनी विवस्त्रा मनुगांधी (१९) के साथ महात्माजी एक ही विस्तर पर रात बीताते थे । २०—१२-१९४६ को निर्मल बसु ने कमरे में प्रवेश कर देखा कि मनु और बापूजी एक ही विस्तर में लेटे है । मनु से गांधीजी ने कहा—आओ, हम दोनों विस्तर पर नग्न होकर सोते हैं । नाति कानु गाँधी की स्त्री आज १६ साल की उम्र से ही बापूजी के साथ एक ही कार्य कर रही है । बापूजी बाद में पुत्र मणि लाल को खत लिखते हैं—मानु जो मेरे साथ एक ही विस्तर में सोती है इससे विचलित न होना । मेरा विश्वास है कि ईश्रर ने ही मुझे इस काम को करने के लिये प्रेरित किया है । गाँधीबाबा ने उनके आत्मकथा अथवा सत्य का प्रयोग पुस्तक में लिखा है—'एक दिन मेरे दोस्त ने मुझे एक वेश्या के घर ले गया। उस घर में जाकर मैं मानो अन्धा जैसा बन गया । शर्म के मारे स्तब्ध होकर उस स्त्री के बगल में खाट पर बैठे रहे । वह स्त्री क्रुद्ध होकर पहले मुझको दो चार बातें सुना दी । तत्पश्चात् मुझे दरवाजे से बाहर निकाल दिया।

इस सम्बन्ध में मैंने अनेक गांधी भक्तों एवं गाँधी गवेषकों के साथ बातें की है । वे इस बात को मानने से इन्कार किया । गाँधीबाबा अत्यन्त कामुक थे । उनके आत्मजीवनी में उन्होंने लिखा है कि उनके पिता के मृत्यु समय जब उनको बुलाया गया तब वे गर्भवती स्त्री के साथ यौन क्रिया में लिप्त

थे । अतः स्त्री को छोड़कर पिता को देखने नहीं गये । देश की आजादी की लड़ाई में अधिक देशप्रेमी जिन्होंने फांसी की रस्सी को गले लगा लिया; बंगाल एवं पंजाव के हिन्दू एवं सिख थे । जालियांवाला वाग में कुख्यात जेनरल डायर की गोलियों का शिकार हुआ था सैकड़ों पंजाबी । वही बंगाल और पंजाब को होना पड़ा था सबसे ज्यादा मुस्लिम जुल्म का शिकार । इन्दिरा गांधी ने आपरेशन ब्लुस्टार के नाम से सिखों के स्वर्ण मन्दिर को ध्वस्त कर दी थी । वहां सिक्खों के गुरुओं के व्यवहृत वस्तुएँ जैसे तलवार, कांगी, हाथ का बाला, पगरी आदि । अकाल तक्खत को मिट्टी में मिला दिया गया जो सिखों मातृभूमि की आजादी के लिये प्राणों को न्योछावर कर दिया था । राममन्दिर (वावरी मसजिद) उद्धार हेतु युद्ध का नेतृत्व दिया था । लेकिन उनका हिम्मत नहीं था मुसलमानों के कोई भी एक मस्जिद का एक भी इँटा स्पर्श करने का ।'

१९४६ में अविभाजित बंगाल में थी मुस्लिम लीग सरकार । १६ अगस्त '४६ को डाइरेक्ट एकशन डे के पहले नोआखाली, त्रिपुरा, चट्टग्राम से लेकर पश्चिम बंगाल के नदीया , २४ परगणा, हुगली, मुर्शिदावाद आदि जिलों में जनसभाएँ आयोजित कर मुसलमानों को समझाया गया कि देश में मुस्लिम लीग की सरकार है । अतः पाकिस्तान के मांग को लेकर जो भी मुसलमान दंगा, आगजनी, नारी अपहरण, बलात्कार, लूटपाट, हत्या आदि कोई भी अपराध क्यों ना करे उसे कोई भी सजा नहीं दी जायगी ।

नोआखाली में हिन्दुओं के कत्लेयाम के नायक गोलाम सरवर के एक जनसभा में मैं (लेखक) उपस्थित था । १६ अगस्त के दो तीन दिन पहले से ही कलकत्ता के आस पास के जिलों से नौकाओं के सहारे मुस्लिम भेड़ियों के झुंड गंगा के घाटों पर क्रमशः एकत्रित हो रहे थे । सावन के घनीभूत बादलों के अन्तराल से उस दिन सूर्य निकला कोलकाता के आकाश में । रात के अन्धकार में तैयार हुए हैं सैकड़ों इसलाम के विश्वासी सेनादल पूर्ण रूप से अन्जान निरीह हिन्दुओं के प्राणों की बलि लेने के लिये । इस सम्बन्ध में लिओनार्ड मोसलेने अपनी किताब The Last Days of British Raj में लिखा है—'सुबह होने के साथ साथ हावड़ा पुलपार कर हावड़ा से झुंड के झुंड आने लगा खतरनाक हथियारों से लेस मुस्लिम गुंढे । वे मिल गये चौरंगी। चित्तपुर आदि स्थानों में प्रतीक्षारत सैनिकों के साथ । शुरू हुआ एक प्रलयकांड कलकत्ता के मुस्लिम बहुल इलाक़ों में जहाँ हिन्दु कम थे । इसलाम के विश्व

प्रेम धूल में मिला दिया असुरक्षित मुसलमानों से घिरा हुआ हिन्दु परिवारों को। आर्तआहतों के चीख, जुल्म के शिकार नारियों की भीषण चित्कार और रूलाई दब गया उन जल्लादी के "लड़के लेंगे पाकिस्तान और अल्ला हो अकबर के उन्मत्त कोलाहल में । अग्नि को शिखाएँ अपने लपट में लेने लगी हिन्दुओं के चल अचल सम्पत्ति, आसमान में उठने लगा कुंडलित काला धुआँ ।

लेकिन बिडम्वना देखिये । देश आजाद होने के बाद ये दंगावाज मुसलमान उनके प्यारा पाकिस्तान में न जाकर इसी देश में रह गये इस उद्देश्य से कि धीरे-धीरे बाकी अंशों को भी पाकिस्तान में शामिल किया जायगा । उनको प्रशासन या नेहरू सरकार ने किसी प्रकार के सजा देने की आवश्यकता नहीं समझा ।

जिन्ना साहव ने देश विभाजन के बाद मुसलमानों को कहा था कि वे भारत की त्याग न करे । कारण वे ही होंगे एक दिन भारत में सरकार बनाने का प्रधान हथियार ।

१९५० साल में पूर्वी पाकिस्तान में भयावह हिन्दु निधन के बाद पाकिस्तान के उजिरे आजम लियाकत अली के साथ नेहरू ने एक सन्धि की । इस शर्त के अनुसार यह स्थिर किया गया दोनों देशों ही अपने अल्पसंख्यकों की रक्षा करेंगे एवं शरणार्थियों को अपने स्थानों में पुनर्वासन कराया जायेगा । लेकिन परिणाम क्या निकला । भारत से एक भी हिन्दु शरणार्थी पाकिस्तान में नहीं लौटा । लेकिन यहां से जो पाकिस्तान प्रेमी मुसलमान पाकिस्तान में बसने गये थे उन्हें ट्रेन से भारत भेजा गया । लियाकत अली ने स्वयं रेल स्टेशन में उपस्थित होकर उन्हें विदा दी ।

१९४६ के दिसम्बर माह में केन्द्रीय कानुन सभा में चुनाव के परिणाम निकलने के बाद देखा गया कि साधारण सभी चुनाव क्षेत्र में कांग्रेस की जीत हुई । और जहां मुस्लिमों के लिये आसन सुरक्षित थे वहाँ मुस्लिम लीग के उम्मीदवार जीते थे । राष्ट्रवादी मुस्लिम उम्मीदवारो की जमानत जब्त हुई । नये निर्वाचित १०२ सीटों में कांग्रेस ५७, मुस्लिम लीग ३०, निर्दलीय ५, अकालीदल २ एवं यूरोपीयें ने ८ आसन प्राप्त किये । इस परिणाम को विश्लेषण करने से पता चलता है कि भारत में रहनेवाले ९७ प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान बनाने के लिये वोट डाले थे । इसके अतिरिक्त जो क्षेत्र कभी भी पाकिस्तान में नहीं जायेगा जैसे उत्तरभारत, मध्य भारत, दक्षिण भारत आदि वहाँ भी मुस्लिम लीग के उम्मीदवार ही जीते । अब वे मोठी मीठी बातें करते

हैं कहते हैं—'हमारे अब्बा चाचा कभी भी पाकिस्तान में जाना नहीं चाहा ।' जायेंगे। ही क्यों ? यहाँ से ज्यादा सुख आराम थोड़े ही वहाँ मिलता । हिन्दु काफेर के पैसे पर हज करने जा रहे हैं । उनके लिये शरियती कानुन है जिससे वे बहुविवाह, तीनतलाक, इच्छानुसार बच्चे पैदा करना आदि कर सकते हैं । कोई रोक नही । और दूसरे मामलो में भारत में लागू दिवानी कानुन को मानेंगे ।

पाकिस्तान प्रेमी मुसलमानों को भारत के राष्ट्रपति बनने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं है । '१९५० ई० के १४ अगस्त पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस पर करांची के डॉन नामक पत्रिका में जिन्ना को लिखे गये जाकीर हुसैन के एक पत्र प्रकाशित हुआ था । पत्र का तारिख है ३० जुन १९४७ । उक्त पत्र में जाकीर हुसैन ने लिखा था—नये मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान बनाने के कार्य में वे सहायता करना चाहते हैं एवं भारत में रहनेवाले कुछ और मुसलमानों के नामों का भी उल्लेख था जो पाकिस्तान निर्माण में सहायता करने को उत्सुक हैं । जबाव में जिन्ना साहव ने लिखा—उनको भारत में ही रहकर मुसलमानों की सेवा करनी चाहिए । बाद में ऐसे पाकिस्तान प्रेमी मुसलमान ही हमारे देश के राष्ट्रपति बने थे । राष्ट्रपति भवन में एक मस्जिद का निर्माण कर उन्होंने भारत के धर्म निरपेक्षता के महान आदर्श को स्थापित किया ।

आजकल मुसलमानों को नौकरी में संरक्षण देने के लिये एक होड़ जैसी बन गयी है । मैं दृढ़ता पूर्वक यह कह सकता हूँ कि मौलवादी मुसलमानों को किसी भी महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर नियुक्त करने से वे देशविरोधी कार्य करेंगे ही । कारण जब तक यह देश दारूल इसलाम (मुस्लिम शासन के अधीन) में परिवर्त्तित नहीं होता है तब तक वे उस देश को अपना स्वदेश के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे । इनका सतत प्रयास होगा दारूल हर्व (गैर मुस्लिम देश) को दारूल इसलाम में अर्थात् मुस्लिम देश में बदलना । इसी मतवाद के लिये दुनिया के करीब ६० देश उनके कब्जे में।

आपको गाइसल ट्रेन दुर्घटना के बारे में याद होगा । उस ट्रेन से उत्तर पूर्वांचल से सेनाओं को काश्मीर भेजा जा रहा था । शेख अलाउद्दीन नामक एक मुसलमान रेलकर्मी (केविन मैंन) ने इस प्रकार लीजर को खींचा कि दोनों ट्रेन आमने सामने होकर टकराया जिसमें २६४ सैन्यकर्मी की जान गयी .अलाउद्दीन बंगलादेश में भाग निकला ।

मुम्बई में जब पाकिस्तानी उग्रवादी हत्या के खेल खेल रहे थे तब वहाँ

के पुलिस के उच्चाधिकारी हसन गफुर सम्पूर्ण चुप्पी साधे बैठे थे । इधर हेमन्त कटकरे, अशोक कामते जैसे पुलिस के उच्च पदस्थ अफसर पाक उग्रवादियों के गोली के शिकार हुए । बाद में सरकार ने गफुर मियाँ को अपने पद से हटा दी । यहां एक और उदाहरण दे रहे हैं—१९४७ में पाक हमलावरों ने जब कश्मीर पर चढ़ाई की तब कश्मीर के महाराजा की सभाओं के मुस्लिम सेनागण अल्ला हो अकबर की नारा देते हुए पाक हमलावरों के साथ हाथ मिलाया ओर महाराजा के सेना प्रधान ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह को गोली मारकर हत्या किया । अब भारत के सेनाओं में मुसलमान संरक्षण माँग रहे हैं । परिणाम क्या होगा । पाकिस्तान यदि भारत पर आक्रमण किया तो ये देश के गद्दार लोग पाकसेनाओं के साथ मिलकर भारतीय सेनाओं के विरूद्ध लड़ेंगे । अभी भी वे अपना सिर नहीं उठा रहे हैं, कारण अभी भी भारत में एक सुसंगठित देशप्रेमी सेनावाहिनी है । मेरे वक्तव्य का समर्थन मिलेगा सरदार बल्लभ भाई पटेल की एक उक्ति से जिन्होंने कहा है— 'भारत में कोई भी राष्ट्रवादी मुस्लिम है यह मैं नहीं जानता । इस देश में एक ही राष्ट्रवादी मुस्लिम है जिनका नाम है-जवाहरलाल नेहरू । करीब २१ साल पहले (बंगला २५ आश्विन, १३९८) आनन्द बाजार पत्रिका में भूतपूर्व राज्यपाल नुरूल हसन के बारे में पत्रकार सुनीत घोष ने क्या लिखा था संक्षेप में उसका विवरण दे रहा हूँ ।

विशाल शरीर वाले बंगाल के ये लाट साहब के बहुत सारे आचरण अभिनव है। ये दलबल के साथ जब दिल्ली आते हैं तब राज्य सरकार के ये विराट पुरुष साहब के लिये और दूसरे दस यात्रियों के ऐसा हवाई जहाज में सवार होना सम्भव नहीं होने के कारण उन्हें यान्त्रिक पद्धति से हेलकर विमान में चढ़ाया जाता है । वहाँ उनके बैठने के लिये विशेष व्यवस्था होती है....बंगाल के ये लाट साहेब के साथ चलते हैं एक छोटा मोटा बैटालियन—सचिव उपसचिव, व्यक्तिगत सहाकारी, उर्दू सहकारी, अरदली और निजी आदमी के अलावे रहते हैं लाट साहब के चिकित्सक तथा अतिथि सत्कार के लिये उनकी आत्मीया मिसेस बाजि । नहीं, यही सब कुछ नहीं है । लाट साहब के विशेष प्रकार के मोगलाई खाना बनाने के लिये आते है तीन विशेष रसोईयाँ और तीन परोसने वाले । और एक आते है लाटसाहब को वस्त्र पहनाने के लिये। कारण वे अपने से कपड़े नहीं पहन सकते । इतने कर्मचारियों में से कोई कोई अपने पद मर्यादा के अनुसार रेलगाड़ी से भी उनके पहले आ जाते है। उनके सारे खर्च (गाड़ी किराया तथा प्रतिदिन की भत्ता) देने पड़ते हैं सरकार को ।

इधर नुरूल हसन साहब बड़े ही बिलासी और सौखिन आदमी हैं । प्रतिदिन सन्ध्या के समय मिजाज को ठीक करने लिये हुइस्की पीने में अभ्यस्त । राजधानी में सिके जुगार में असुविधा न हो इसके लिये कोलकाता से ही उनके साथ हुईस्कीं और एक विशेष प्रकार के गिलास भी लाया जाता है ।

वैसा गिलास नहीं होने से वे बिलैती पानीय मुंह में नहीं डाल सकते। नुरूल हसन साहब राजधानी में हैं या नहीं इसे जानने के सहज उपाय है सर्कुलर रोड के बंग भवन के रसोईघर के निकट कुछ समय टहलना । कच्चा पपीता को पीसकर मांस के साथ असली घी देकर सिझाते समय उससे निकली खुशंबु आपके नाक तक जरूर पहुँचेगा । बहुधा लाट-साहब के नाति नतनीयाँ भी उनके साथ होते हैं और तब उनके घुमने फिरने के लिये कईएक गाड़ियों की व्यवस्था रखना होता है । तीन गाड़ियाँ तो हर समय उनके दुआरी पर हाजीर है । दिल्ली आकर ही सेकुलर लाट साहब अजमेर शरिफ जाने का जीद पकड़ते हैं । उस जिद को पुरा करने के लिये इस महंगाई के जमाना में भी बहुत पेट्रोल जलाना पड़ता है राज्य सरकार को । तत्पश्चात् लन्च डिनर आदि तो लगा हुआ है हीं । राजधानी में नुरूल साहब के दोस्तों की कमी नहीं । ऐसे दोस्त जिनका राज्य के साथ कोई सम्बन्ध भी नहीं है । लेकिन लाट साहब के प्रिय मित्रों को दावत देने के काम में तो राज्य सरकार 'ना' नहीं बोल सकते । अतः उनके दोस्तों को खुश करने के लिये पाँच सितारे होटल अशोका, कनिष्क आदि से दामी भोजन को मंगाने में कोई आपत्ति नहीं। जितना खर्च होगा उसके लिये तो सरकार है ही । इसके पहले राजधानी में राज्य मन्त्रियों के साथ पत्रकारों के बैठक में कम खर्च के बहाने से एक कप चाय ओर दो समोसे या निमकी से ज्यादा नहीं दिया जाता था । लेकिन लाट साहब के धर्म निरपेक्षता और प्रगतिशीलता के आदर्श को ऊँचा करने के लिये सरकार रूपी शेठ महाजन को जनता के पेट काटकर भी उनके दोस्तों को भरपेट खिलाने की व्यवस्था करनी पड़ती है ।

यह तो बात हुई सिर्फ एक राज्यपाल की । अब सुनिये तृणमूल कांग्रेस के राज्यमंत्री सुलतान अहमद की बात । गत १-६-२००९ से १-१२-२००९ तक अर्थात् छः महीने सुलतान साहब दिल्ली के अशोका होटल में ठहरे थे। उनके होटल का बिल हुआ ३७ लाख रूपये । इस होटल बील चुकाया केन्द्रीय नगर उन्नयन दफतर ने । सुत्र आनन्द बाजार पत्रिका की संख्या १३-२-२०१० ।

लेखक के मन्तव्य :—जहाँ प्रतिदिन कई एक लाख शिशु या बच्ची को

रात में भूखे पेट सोना पड़ता है, वहाँ ऐसे देश सेवकों के चरित्र का विचार या न्याय भार मैं सहृदय पाठक पठिकाओं के हाथों में छोड़ रहा हूँ । इस प्रसंग में एक और राज्यपाल के नाम उल्लेख करना पड़ रहा है । वे कोलकाता के राज भवन में रहते समय प्रति माह सिर्फ ५०० रुपये वेतन लेते थे । उनका नाम था हरेन्द्र कुमार मुखर्जी । नेहरू ने एक वार उनसे कहा था—आप अन्य राज्यपालों को अपमानित कर रहे हैं । मैं मुसलमानों के ऐसे फिजुललखर्ची आचरण के कोई दोष नहीं देखता । कारण कुरान हदीस माननेवालों को दारूल हर्व (काफिरशासित देश) के प्रति ऐसा आचरण करना ही होगा । इस सम्बन्ध में यदि आप विस्तार में जानना चाहते हैं तो देख सकते हैं ढ़ाका से प्रकाशित दैनिक पत्रिका अल् हहसान । उसमें प्रतिनियत मुसलमानों को निर्देश दिया जा रहा है कि गैर मुस्लिम देशों में जो मुसलमान है उनके क्या कर्त्तव्य है । लेकिन फिर भी सब कुछ का एक विकल्प भी होता है । करीम महम्मद अली चकला, सुप्रिम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश हेदायतुल्लाह, भूतपूर्व राष्ट्रपति ए० पी० जे अबदूल कलाम जैसे देशप्रेमी मुसलमान भी इस देश में है

द्वितीय भाग

द्विखण्डिता माता, धर्षिता भगिनी ।

१९४७ में देश विभाजन के बाद पाक प्रेसिडेन्ड पर भेज मोसारफ के अब्बा जान ने दिल्ली के दरियागंज के मकान को १२ लाख में बेचकर बक्सा भरकर रुपये लेकर पाकिस्तान ट्रेन से चले गये । कोई भी काफेरने (मूर्त्ति पूजक हिन्दु) उनके रुपये नहीं छीना न ही लूट किया दूसरी ओर १९५० साल में जब पूर्व पाकिस्तान से व्यापकरूप से हिन्दु निधन और हिन्दु भगाओ शुरू हुआ तब मुसलमानों ने महिलाओं के साड़ी, साया ब्याऊंज तक उतार लिया । उस समय तक प्लास्टिक का आविस्कार नहीं हुआ था । महिलाएँ कागज से अपने यौनांग को ढ़ककर इस देश में आकर उपस्थित हुई । इस घटना पर पश्चिम बंगाल विधान सभा में मुख्यमंत्री विधानचन्द्र राय के साथ कम्युनिस्ट नेता सोमनाथ लाहिड़ि की जो बातचीत हुई उसके डॉकुमेन्टरी प्रमाण मेरे संग्रहशाला में है ।

अब रंजन बन्दोपाध्याय के ७-२-१९९९, १४-२-१९९९ तथा २०-२-९९ तारीखों में दिये गये आलोचनाओं के थोड़ा सा अंश यहाँ उल्लेख किया जा रहा है । लम्बे समय के खोज के फलस्वरुप खोया हुआ तथा छिपाया गया करुण इतिहास के कुछ पन्ने उसने जनता के सम्मुख उपस्थित किया है। सम्पूर्ण किताब को आप पढ़े या न पढ़े मेरा हार्दिक अनुरोध है इस अध्याय

को आप दो वार तीन वार पढ़े, सोचे । हृदय के आवेग से इसे समझे और तत्पश्चात् अपना विचार दें कि इस आधी आजादी के लिये हमें कितना मूल्य चुकाना पड़ा है, अभी भी पड़ रहा है और अनन्तकाल तक पड़ेगा ।

(१) आकाश मार्ग से उड़ते हुए आ रहा है टोकरी बन्द बच्चे । उनके लिये आजादी का अर्थ है भारत का विभाजन । टुकड़ों में बंटा हुआ शरीर दंगों में घर त्यागी कड़ोरों आदमी, खोया हुआ लाखों शिशु और ततोधिक भ्रुण हत्या । (आनन्द बाजार पत्रिका ७-२-९९)

(२) राजमार्ग में दिनदहारे नग्न नारियों के लम्बे जुलुस । दंगे और बलात्कार के बाद भी उनके दुःख दूर नहीं हुए । परिवार एवं सगे सम्बन्धी ने उन लड़कियों को प्रवेशद्वार से ही भगा दिया । (आ० बा० प० १४-२-९९)

(३) सुहागिन के गले में फांसी की रस्सी । (आ० बा० प० २१-२-९९) ऐसे ही नारियों तथा कन्याओं की व्यथाभरी कहानी को ऊर्वशी बुटालियन ने उनके फिलहाल प्रकाशित "The other side of silence voice from the partition of India " नामक पुस्तक में मार्मिक चित्र के साथ प्रस्तुत किया है जो इतिहास के कसौटी पर निर्धारित भारत विभाजन के असली सच्चाई है। नकली इतिहास सजाकर मिथ्या वाणी सुनाकर भारत की जनता को जो अन्धकार में रखा गया था उससे धीरे धीरे पर्दा हट रही है ।

१९४७ के ३ जून को भारत को तोड़ने की घोषणा की गयी । चन्द महिनों में पार्टिसन हो गया । पार्टिशन की घोषणा एवं पार्टिशन का होना दोनों के बीच जो कुछ दिन थे उसी के अन्दर असंख्य चिट्ठीया आयी ऑल इण्डिया कांग्रेस कॉमिटी के दफदर में । हर चिट्ठी में असहायता, विह्वलता करूणा भरी निवेदन ।

१९४७ के १४ मई को कांग्रेस प्रेसिडेन्ट कृपालनी को लिखा गया एक पत्र—" आपने पंजाब के अल्पसंख्यक सम्प्रदाय को अर्थात् हिन्दु एवं सिखों को उपदेश देते हुए कहा है कि जिनलोगों के पास अपने को बचाने का सामर्थ नहीं है वे अन्य देशों में चले जाय । इससे अधिक निर्दयतापूर्ण उपदेश और क्या हो सकता है ? आपके बातों ने यह समझा दी कि महाप्रतापी कांग्रेस पंजाब, बंगाल एवं सिन्ध प्रान्त के अल्पसंख्यकों को रक्षा करने में या उनके हित में जरासा भी कार्य करने में अक्षम हैं । कांग्रेस ने इतने दिनों तक हिन्दुओं को अहिंसा मंत्र से दीक्षित किया है, वही कांग्रेस अब यह दुहरा रहे हैं स्वदेश परित्याग करने का उपदेश । क्या आप हमें यह कहेंगे कि किस स्थान

को आपने हमारे निवास के लिये चिन्हित किया है ? ऐसी कौन सी व्यवस्था आपने की है जिससे हम सम्मान के साथ विदेश या परदेश में जी सकते हैं ? कैसे जायेंगे ? कितने लोग जायेंगे ? कहाँ जायेंगे ? चल अचल सम्पत्तियों का क्या होगा ? क्या आप प्रत्येक को नौकरी देंगे ? या व्यापार करने का मौका ? या जीवन भर आपके शरणार्थी शिविरों में रहेंगे ? भिखारी जैसा। अनुकम्पा पर निर्भरशील होकर ?'

इतिहास इन प्रश्नों के उत्तर कभी नहीं खोजा । अन्ततः हमारे देश में कांग्रेसी शासनकाल में लिखित इतिहास में इसका उत्तर नहीं है । भारत तोड़ने की घटना सभ्यता के इतिहास में एक प्रबल भूकम्प जैसा है । सभ्यता के इतिहास में इसके पहले या बाद में भी इतने मनुष्य इतने कम समय में अपने घर दुआर खेत जमीन देश का परित्याग नहीं किये होंगे । कुछ ही महीनों में एक करोड़ से ज्यादा आदमी खण्डित भारत की सीमा पार कर आये गये। विध्वस्त हुआ गांव पर गांव । पाकिस्तान या पश्चिम पंजाब से आदमियों का कतार चले हैं भारत की ओर । मनुष्यों की संख्या कम करके चार लाख। ऐसा परिदृश्य इतिहास ने मिटा दिया है । पार्टिशन जैसा एक छोटी सी घटना है । भारत विभाजन का कोई इतिहास ने कभी नही कहा इस निर्मम खेल की कहानी जो हमलोगों ने खेला था ४७ के बच्चों के साथ । संख्यातीत शिशु, नवजात शिशु जिनकी छोड़कर चले गये थे परिवारों के लोग । एक कहावत है—आप बचो तो बाप का नाम लेना । भारत विभाजन के बाद ही ऐसे फेंके गये, छोड़े गये या खोये गये अनगणित निष्पाप शिशुओं के बारे में कभी किसी ने तथ्यानुसन्धान नहीं किया । उनके बार में सोच तक नहीं आने दिया हमारे इतिहास ने । एक मर्मान्तिक सत्य यह है कि जो बच्चों को जान से मारकर या फेंक कर सिर्फ अपने जान के खातिर बड़े लोग सीमा पार कर भाग आये वे अधिकांशतः थी महिलाएँ । वे विवश थी अपने बच्चों को छाड़ने में।

त्रिलोक सिंह का उम्र था उस समय नौ । जब भारत का विभाजन हुआ तब त्रिलोक के पिता एवं दो चाचाओं ने तय किया कि वे भारत में पलायन करेंगे । दुर्गम रास्ते को पार कर जाना होगा । राहों में नाना प्रकार के खतरे। उन्होंने निश्चय किया कि घर के कन्या एवं महिलाओं और बच्चों को मारकर वे भागेंगे । इससे उनको भागने में सुविधा होगी । इस बारे में त्रिलोक सिंह क्या कहते हैं सुनिये :—

मेरे पिता एवं चाचाओं ने यह समझ गये थे कि भारत के बटवारे के बाद हमरा गांव पाकिस्तान में चला जायगा । सिक्खों के उपर हमला एवं अत्याचार पहले से ही चल रहा था । मेरे चाचा मंगल सिंह एवं पिता यह सोच रहे थे कि गांव छोड़कर भारत जाना पड़ेगा, लेकिन महिलाओं को एवं बच्चों को साथ में लेना उचित नहीं होगा । ऐसा करने से सभी मरेंगे । एकदिन मैंने पिता एवं चाचा की बातचीत सुना । वे बोल रहे थे हम सबों को मारकर वे भागेंगे । मेरा उम्र उस समय नौ साल था । मुझे जिन्दा रहने की अदम्य इच्छा हुई । मैं पिता और चाचा के पैर पकड़कर मेरी जिन्दगी की भीख माँगी । मैने कहा—मुझे मत मारिये, मैं भी आपके साथ जाऊगा । मुझे एकबार कोशिश करने दें । उन्होंने मेरी विनती को स्वीकार किया । हमारे घर के औरत एवं बच्चों को मिलाकर सतरह आदमियों की हत्या कर वे मुझे लेकर भारत की ओर रवाना हुए ।

अमृतसर से कुछ दूर पर त्रिलोक अब एक छोटा सा दुकान चलाते हैं। कपड़े की दुकान । पिता की मृत्यु हो गयी । जिन्दा हैं मंगल सिंह । उनके नये परिवार, त्रिलोक का भी नया संसार । मंगलसिंह प्रतिवर्ष एकबार जाते हैं स्वर्ण मन्दिर में पूजा करने । प्रायश्चित की पूजा । त्रिलोक कहते हैं—"रात में मुझे नींद नहीं आती । घर के वे सतरह आदमियों की हत्या का दृश्य मेरे यादगार को सताता है, त्रिलोक भी मंगलसिंह के साथ जाते हैं प्रायश्चित करने हेतु ।"

कुलबन्त सिंह देश के बंटरारे में सब कुछ खो दिये है । पूरे परिवार में उनका उम्र था उस समय सात या आठ । वे कहते हैं—मेरे पिता को हमलावरों ने मेरे आँखों के सामने खून किया । मैं उस समय बहुत छोटा था । माँ के सामने पिताजी को टुकड़े-टुकड़े कर डाला । अन्ततः एक सौ या ढेर सौ पीस होगा । छोटे-छोटे पीस । मैं खुब काँप रहा था । कम्पन रूक नहीं रहा था । मेरे चारों ओर आग जल रही थी । मुझे बहुत प्यास लगी थी । लग रहा था ऐसी प्यास कभी नहीं लगी थी । हमलावरों ने उस समय छोटे छोटे बच्चों को उठाकर आग में डाल रहे थे । मेरी माँ ने मुझको पिताजी के बगल में आग में सुला दी थी । यह स्मृति है कुलबन्त सिंह के । अब उम्र साठ साल (१९९९ मे), काम करते है एक अस्पताल में। इतिहास कभी यह जानने की कोशीश नहीं की उन दिनों कितने गर्भपात हुए थे और कितने माँ ने बाध्य होकर सन्तानों को मातृगर्भ में ही नष्ट कर दी।

यह तथ्य खोज के अभाव में विगत ५० सालों में क्रमशः बिलीन होते गया। उर्वशी बुटालियाने लिखा है "मांस अबोरसन्स्" । जब कि यह निषिद्ध और गैरकानुनी काम है अतः इसका कोई रेकॉर्ड नहीं रक्खा गया । फिर अनेक लड़कियां गर्भ गिराने में सहमत नहीं थी । वे सामाजिक विनाश और कलंक को शिरोधार्य कर मां बननी चाही थी । लेकिन बच्चों का जन्म देने के बाद वे समझ गये थे कि इस समाज में अबैध सन्तान को छाती में लेकर जिन्दा रहना असम्भव है । अवैध सन्तान के त्याग करो अन्ततः तब नष्ट लड़की के रूप में भी जिन्दा रहने का अधिकार मिलेगा । यही था समाज का विचार, झुंड के झुंड माताओं ने इलाहाबाद के सेवाश्रम में अपने अवैध सन्तानों को छोड़कर चले गये थे अपने अपने गन्तव्य स्थल की ओर । फिर कभी वे लौट कर नहीं आये अपने सन्तानों के पास । इस प्रकार हजारों हजार बच्चे बच्चियों के भाग्य उन्हें कहां ले गया यह आज तक स्पष्ट नहीं है । सिर्फ इतनी सूचना मिली है कि हजारों हजार बच्चे लापता हो गये । भारत के खंडित होने की इतिहास के अंग स्वरूप है । ऐसे खा जानेवाले बच्चें । सामाजिक लज्जा एवं संस्कार युक्त पाप बोध थे दोनों के प्रभाव से हमने विसर्जन दिया था भारत के लाखों शिशुओं को।

क्या सभी बच्चों को माताओं ने अपने हाथों छोड़ आये थे इलाहाबाद सेवाश्रम में ? नहीं; माताएँ रह गयी अपने स्थानों में या खो गयी सामाजिक लज्जा के गलियारों में । बच्चे वॉस्केट मे लाये जाते थे इलाहाबाद में । अमृतसर और दिल्ली के बीच चालु था हवाई जहाज । इस हवाई जहाज से अनेक बच्चों को भेजा गया था पंजाब से दिल्ली । हर बच्चा को एक बास्केट या टोकरी में बैठाकर उसके शरीर में सामान्य परिचयपत्र देकर उसे आकाशमार्ग में भेज दिया गया । टोकरी में छोटे छोटे कमीज और वस्त्र भर दिया जाता था । वास्केटों को दिया जाता था विमान सेविकाओं के जिम्मे । वे सभी वास्केट शिशु पहुँचता था दिल्ली के कोई समाजसेवी के पास । उसके बाढ़ दिल्ली से फिर वास्केट शिशुगण उड़ते थे इलाहाबाद के रास्ते । इलाहाबाद पहुंचने पर उन्हें ले जाया जाता था अंस्पताल मे । उसके बाद ? कहां खो गये वे वास्केट बेबियां । कहां गये वे जिनको माताओं ने छाती में लिपटाकर पहुंचायी थी इलाहाबाद सेवाश्रम में ? ऐसे कुछ बच्चों को स्थान मिला पाकिस्तान के अनाथालयों में । कन्या होने पर उसे मार दिया गया । क्योंकि अनाथ आश्रम में कन्या शिशु अवांक्षित थी ।

"दस लाख आदमी मर गये रास्ते में । ७५ हजार लड़कियाँ बलात्कार के शिकार बनी, हजारों हजार परिवार बट गये ।" "कम से कम ७५००० से १००,००० लड़कियों को लुटरों के हाथों अस्मिता खोनी पड़ी या मारी गयी । दुर्वृत्तों ने लुटा लड़कियों के सम्पत्ति एवं शरीर । ५० हजार बच्चों को जन्म लेना पड़ा था बलात्कार के फलस्वरूप । लुटी गयी लड़कियों के बच्चे देश विभाजन के और एक फसल है ।"

जो लड़कियां लुटेराओ के हाथों मारी गयी वे मरकर बच गयी । जो नहीं मरी वह गर्भ में धारण किया लुटेराओं के सन्तान । अन्त तक उनके लिये क्या व्यवस्था की गयी थी? कहाँ खो गये ऐसे पितृ परिचयहीन अवांछित बच्चे बच्चियाँ । इस प्रश्न से इतने दिनों तक स्वाधीनता के इतिहास ने अपने को दूर ही रखा है । कोई-कोई परिवार ने धर्षिता लड़कियों को लौटाकर लेना चाहा लेकिन एक ही शर्त्त पर—बच्चा को छोड़कर आना होगा । ऐसे बच्चे को यत्र तत्र फेंककर परिवार में लौटने वाली माताओं की संख्या भी कम नहीं थी । लेकिन जो बच्चे जन्म ही नहीं लिये थे, माँ के गर्भ में पलने वाले ऐसे बच्चे क्या कोई सेवाश्रम या अनाथालय में जन्म लिये थे ? न कि व्यापक रूप से भ्रुण मोचन के द्वारा हजारों हजार सन्तानों को विनष्ट किया गया । यह भ्रुण हत्या की गुप्त घटनाएँ कहाँ होती थी ? किनके सहायता से ? करोलबाग के कपूर अस्पताल था इस अत्यावश्यक पापकर्म की समाधान करने का उपयुक्त स्थान । गर्भपात कराते थे डा० कपूर साहव । वे थे लड़कियों के भरोसा। ऐसा गैर कानुनी काम के लिये उनको अवश्य ही जैसा दिया जाता था ।

देश विभाजन के तुरन्त बाद ही सरहद इस पार तथा उस पार लुटी गयी एवं धर्षिता नारियों को संख्या होगी अस्सी हजार से भी ज्यादा । यदि कश्मीर की बात मान लिया जाय तो यह संख्या एक लाख तक पहुंचेगी । धर्षण तथा लुट के अलावे दूसरे ढ़ंग से अकथनीय जुल्म ढाया गया था । लड़कियों और महिलाओं पर । उन्हें नंगी कर सबके सामने सड़क से ले जाया गया था । उनके समस्त शरीर पर सूई चुभाकर चित्रण किया गया था । बहुतों का स्तन को काट लिया गया था । उनको जबरन विधर्मी पुरूषों के साथ सहवास करने के लिये बाध्य किया गया था । फलस्वरूप अनेक लड़कियाँ गर्भवती हो गयी थी ।

पाकिस्तान में ऐसे लड़कियों की दीमाग की धुलाई करते थे मोल्ला मौलवी। वे सिक्ख एवं हिन्दु लड़कियों को समझाते थे कि अपना देश में लौटने से

तुम्हें कोई फायदा नहीं है । तुमलोगों ने मुसलमानों के साथ सहवास की है। भारत में तुम्हारे लिये सामाजिक पुनर्वासन सम्भव नहीं· तुमलोग नष्ट चरित्र के हो गये हो । हिन्दुओं के लिये तुमलोग मर गये हो । इस प्रकार प्रथम स्तर पर दिमाग की धुलाई करने के बाद मौलवीयों ने उन्हें नमाज अदा कराते। उद्देश्य धीरे-धीरे उन लड़कियों को इसलाम धर्म में दीक्षित करना ।

यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि इसलाम धर्म में गैर को मुस्लिम बनाना तर्कसंगत और न्यायपूर्ण है । इसके उद्देश्य एक ही, दुनिया में मुस्लिम आवादी बढ़ाना जिससे कि एकदिन सारी दुनिया इसलामिक हो जाय । पाकिस्तान से लौटायी गयी हजारों हजार लड़कियों ने सचमुच आत्महत्या की थी । जैसा कि सोहागवती ने । उसे उद्धार कर लाया गया । पति, पिता, माता, भाई बहन सब कोई गये थे कैम्प से उसे लौटाकर लाने के लये । लेकिन सभी गुंगा बनकर सोहागवती की ओर देखने लगे । सोहाग बार-बार रोते हुए बोलने लगी क्या मुझे तुमलोग पहचान नही पा रहे हो ? अच्छा से देखो, मैं तुमलोगों के सोहाग हूँ । अन्तिम वार के लिये छोटा भाई से लपेटकर वह फूटपूट कर रोने लगी और कहने लगी—विहारी, तु भी ? क्या उत्तर देगा विहारी ?

ट्रक से लदी हुई कितनी लड़कियाँ तो प्रतिदिन आते हैं पाकिस्तान से। कहाँ उसे ले जाऊँ ? पंजाब से भागा हुआ एक शरणार्थी सुन्दरलाल प्रतिदिन आशा लिये हुए प्रतीक्षा करते है लाजु की । सोचते है एक समय लाजु को कितना पीटते थे वे । मन दुःख से भर जाता है । अब लाजु कहां है ? किसके साथ है ? कितना कष्ट झेल रही होगी । लालचंद सुन्दरलाल के गांव के आदमी हैं । एकदिन उसने सुन्दरलाल के घर आकर कहा—लाजु भावीजी को देखा। सुनकर सुन्दरलाल के हाथों से तम्बाकू गिर गया उत्सुकता से कहा—लाजु को कहा देखा है ?

वाघा बर्डर में—लालचन्द ने कहा । बाघा बर्डार ? निश्चय ही तुमने गलत देखा है । पहचान नहीं पाये शायद ।

लालचन्द ने कहा—लाजुभाभी को पहचानने में मेरा भूल नहीं हो सकता। कैसे पहचाना ?

ठुड्डी में उल्की का निसान (Tattoo), गाल पर और एक ललाट पर। ठीक किया ? ठिंक ठीक—सुन्दरलाल ने आश्चर्य भरी भाव से कहा ।

अमृतसर के सीमान्त शहर है ओआघा । वहाँ हमलावरों के चंगुल से छुड़ा कर लाये गये लड़कियों के शिविर में लज्जवती है । सुन्दरलाल निकल

पड़े चौकी का लाज के उद्देश्य से । वहाँ के कैम्प में ही लाजु प्रतीक्षारत है घर लौटने के लिये । वहाँ अन्त तक लाजु के साथ सुन्दरलाल की मुलाकात हुई । थर-थर काँप रहा था उसके शरीर । सुन्दरलाल को देखकर उसके मन से भय समा गया । सुन्दरलाल के मन में जरासा भी शक नही है कि उनके सामने जो खड़ी है वही लाजु है । लाजु के लौटाकर घर ले गये सुन्दरलाल और उसे अपने हृदय में प्रतिष्ठित किये ।

फिर भी मन ही मन सोचता हूँ आज भी क्यों देश की जनता देशविभाजन के उत्तरदायी नेताओं के बने पत्थरों की मूर्त्तियाँ डिनामाईट से तोड़ देते और उन स्थानों पर सोहागवती, लज्जावती आदि नारियों की मूर्त्तियाँ स्थापित नहीं करते । जैसा कि किया गया था ऑलिगर क्रॉमवेल को ।

हमारे नारीवादी नेतृत्व से यह जानने की इच्छा होती है वे क्यों पाकिस्तान निर्माण के ठीक पहले बलात्कार के शिकार बनी ये सब नारियों एवं शिशुओं के प्रतीक मूर्त्ति स्थापित कर स्वतंत्रता दिवस पर इनके गले में माल्यदान नहीं कर रहे हैं ? और क्यों उनके चरणों में माथा स्पर्श कर उनको श्रद्धा नहीं दे रहे हैं ?

इसका कारण अति स्पष्ट है और वह है "मुस्लिम वोट", सुना है दुनियां में सबसे मूल्यवान धातु है यूरेनियम । लेकिन भारत में सबसे मूल्यवान है मुसलमानों के वोट । और मुसलमान भी यह भलिभांति समझ गये हैं कि उनकी संख्या जितनी बढ़ेगी उतना ही ये भोट माँगने वाले भिखारियों के दल उनके तलवा चाटते रहेंगे । दूसरी ओर भारत से भी कुछ मुसलमान लड़कियों को पाकिस्तान ले जाया गया था । वहाँ एक भी लड़की का गर्भपात नहीं कराया गया । उनके बच्चों को मुसलमान बनाकर समाजने उन्हें ग्रहण कर लिया । और हर लड़की को विवाह कर समाज में उसे सम्मान पूर्वक स्थान दिया गया ।

भारता माता के दुर्भाग्य है कि उस समय अब्राहाम लिंकन जैसे कोई नेता हमारे देश में नहीं थे जो कठोरता से परिस्थितियों का मुकावला कर देश विभाजन को रोक सकते थे । इसके ज्वलन्त उदाहरण है अमेरिका । लिंकन यदि दृढ़तापूर्वक अलगावादियों को दमन नहीं करते तो अमेरिका का हाल हमारे जैसा होता । छोटे-छोटे राज्य आपसी गृहयुद्ध में लिप्त होकर एक दुर्बल जाति में परिणत होता ।

जिन्ना साहब गृहयुद्ध का भय दिखाकर देश को खंडित करवाने में सफल हुए लेकिन क्या देश को तोड़ने के बाद भी दुर्वलचित्त कमजोर स्वार्थी अपरिणामदर्शी नेतागण रक्तपात को बन्द करने में सफल हुए है ?

बंगलादेशी बर्बर सेनाओं के लालसा के शिकार हुई थी अनगिनत नारियाँ। पिता के सम्मुख कन्या । पुत्र के सम्मुख माताएँ बलात्कार के शिकार बनी पहाड़ी इलाके चटगांव के अन्तर्गत ऐसा एक भी गांव नहीं मिलेगा जहां कोई न कोई नारी सेनाओं के पाशविक अत्याचार के शिकार नहीं बनी है । ये असहाय माताओं एवं बहनों की चरम आत्म त्याग की कहानी दुनिया के कितने आदमी जानते हैं । खालेदा के शासनकाल में असंख्य हिन्दु अल्पसंख्यक कों पर सर्वाधिक घृणित अत्याचार हुए खास कर नारियों पर । लेकिन सरकार ने उसे रोकने के बजाय और मदद दी 'जुल्म करनेवालों' को ।

१९७१ में पाक सेनाओं ने जिन नारियों को कैद कर महिनों तक बलात्कार की । बंगलादेश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री खालेदा जिया उन्हीं में से एक थी वर्वर पाक सेना भारत के जेनरल जगजीत सिंह अरोरा के सामने आत्म समर्पन करने के बाद उनके चंगुल से मुक्ति मिली खालेदा जिया जैसे हजारों हजार नारियाँ। युद्ध के अन्त होने पर खालेदा के पति जियाऊल रहमान ने ढाका लौटने के बाद उसे स्वीकार करने में सहमत नहीं हुए । जियाऊल रहमान की शिकायत थी कि उनकी पत्नी जबरदस्ती से नहीं अपितु अपने से वहां जाकर महिनों तक पाक सेनाओं के साथ बितायी है । पति के असहमति से खालेदा धानमंडी के ३२ नं० मकान पर रहने लगे और शेख मुजिबुर रहमान से व्याकुलता पूर्वक अर्जी पेश करते थे । मुजिबुर रहमान ने जियाऊल रहमान के पास उनके लौटने की व्यवस्था की । मुजिबुरजिया को उनके धानमंडी के घर पर बुलाकर खालेदा को अपनी कन्या के माफिक जियाऊर रहमान के हाथों सौंप दिये । उन्होंने जिया को विवश किया खालेदा को स्वीकार करने में । इस घटना के विस्तृत विवरण ढाका से प्रकाशित एक पुस्तक में छापा गया था । पुस्तक प्रकाशने के पहले ढाका के एक दैनिक पत्रिका में धारावाहिक रूप से छापा गया था।

१९७५ में ये पाकिस्तानी सेनाओं ने ३० लाख निर्दोष आदमियों की हत्या की थी घातक दलाल निर्मूल कॉमिटी के हिसाब से ४ लाख नारियाँ धर्षिता हुई थी ९ महीनों के अन्दर युद्धकालीन समय ।

—o—

लेखक का अन्य-अन्य पुस्तकें

१. श्री अटलबिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण अडवाणी
   के खुला पत्र मूल्य—१०)
२. मानवता शत्रु इस्लाम १०)
३. ममता बन्दोपाध्याय खुला पत्र—३)
४. निशब्द संत्रास—१२)
५. धर्षिता जवान वन्दी—२५)

प्राप्ति स्थान :—**विवेकानन्द साहित्य केन्द्र**
६, बंकिम चन्द्र चटर्जी स्ट्रीट
कलकाता-७३ सहायक मूल्य १२) रुपये
किसी प्रकार के विवाद के स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

हिन्दी अनुवादक : नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्यजी, गया
प्रकाशक—**रविन्द्रनाथ दत्त**
फोन : (033) 23217144 **प्रथम प्रकाशक : १५ अगस्त, २०१२**
मोबाइल : 9433047144

प्राप्ति स्थान :
विवेकानन्द साहित्य केन्द्र
६, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कोलकाता ७०० ०७३